V.K.S.U. Ara.

द्वारा — रोहतास महिला महाविद्यालय सासाराम।
श्री कामेश्वर सिंह असिस्टेंट प्रोफेसर।
विषय :— राजनीति विज्ञान
मो० नं० — 9430436771, 8539085064
वर्ग :— बी० ए० पार्ट — III (प्रतिष्ठा)
पत्र — VI (राजनीतिक विचारक)
E.mail I.D. — ksinghrmc@gmail.com

प्लेटो के आदर्श राज्य के उद्देश्य :—

उद्देश्य (Aims) :— व्यक्ति की आर्थिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आवश्यक संस्थाओं के आधार पर उसने आदर्श राज्य का निर्माण किया है। प्लेटो के आदर्श राज्य के अनेक महत्वपूर्ण उद्देश्य है कि —

Scanned by CamScanner

(i) आनन्द प्राप्ति (ii) आर्थिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि (iii) आन्तरिक ~~शा~~ शान्ति तथा सुरक्षा (iv) एकता।

इस प्रकार प्लेटो के उद्देश्यों को आदर्श राज्य में निहित किया है। प्लेटो के आदर्श राज्य में व्यक्तिगत महत्व तथा विचार का स्थान आर्थिक आधार [illegible] हुआ है। दार्शनिक शासक प्लेटो के समस्त गुणों का आधार होता है। दार्शनिक शासक में आत्मा के किसी भी गुण का अभाव नहीं होगा।

तुलना :- (Comparison) :-

इस प्लेटो के आदर्श राज्य की तुलना राम राज्य से कर सकते हो। राम राज्य में भी महाकवि तुलसीदास ने भी राम को दार्शनिक राजाओं की तरह ही शक्तिशाली और विवेकी माना है। प्लेटो के आदर्श राज्य की तुलना महात्मा गाँधी के राम राज्य से किया जा सकता है। लेकिन महात्मा गाँधी का राम राज्य अधिक वास्तविक दिख पड़ता है और प्लेटो [illegible] आदर्श [illegible] है।

आलोचना :- (~~Criticism~~) प्लेटो की आदर्श राज्य की आलोचनायें निम्नलिखित ढंग से की गई है

(i) आदर्श राज्य की अव्यावहारिकता को देखते हुए उन कारणों में विचार धारों की सजा कही गई है आदर्श राज्य परिकल्पना तथा कल्पना है। प्लेटो के आदर्श राज्य को पृथ्वी पर नहीं उतारा जा सकता इसलिए प्लेटो का आदर्श राज्य अव्यावहारिक है।

(ii) आदर्श राज्य की आलोचना दूसरी यह है कि प्लेटो ने शासक और संरक्षक वर्ग को उन सुखों से अलग कर दिया है जिन्हें वर्तमान समाज का मानव काफी पसन्द करता है। दार्शनिक शासक और संरक्षक वर्ग से कंचन और कामनी को दूर कर दिया है। जिसके अनुपालनार्थ में दोनों वर्ग निष्ठापूर्वक कार्यों का सम्पादन नहीं कर सकते।

(iii) तीसरी आलोचना यह है कि प्लेटो ने आदर्श राज्य को तीन वर्ग के विभाजित कर उनके द्वारा प्रस्तुत रूप रेखा स्पष्ट नहीं किया है। उसकी

Scanned by CamScanner

शिक्षा-योजना और साम्यवाद योजना में अनेक त्रुटियाँ हैं। वह दार्शनिक वर्ग के लिए सम्पत्ति [illegible] तक [illegible] ग्रहण करने का आदेश देता है। जिसे कोई पसन्द नहीं करता।

(iv) प्लेटो ने अपने आदर्श राज्य में [illegible] का खण्डन किया है। [illegible] सौंदर्य तथा [illegible] और [illegible] कला का भी बहिष्कार करके [illegible] पर रोक लगा दिया।

(v) आलोचकों का कहना है कि राज्य में कानून का कोई स्थान न देकर प्लेटो ने काफी भूल की है। इसकी सम्पूर्ण उपेक्षा के कारण ही आदर्श राज्य की कठोर आलोचना प्लेटो की काल से लेकर आधुनिक काल तक हो रही है।

(vi) प्लेटो ने आदर्श राज्य में नैतिक जीवन तथा राजनीतिक जीवन का मिश्रण-मेल स्थापित करने का प्रयत्न किया है। उसने समस्त राजनीतिक चिन्तन नैतिकता [illegible] जिसमें [illegible] स्थान दिया है।

निष्कर्ष :— अतः अन्त में हम कह सकते हैं कि प्लेटो का आदर्श रिपब्लिक में एक बड़े आदर्श की कल्पना पर आधारित है और अपने आदर्श की प्राप्ति के लिए वह अथक प्रयास करता है। अपने आदर्श राज्य में प्लेटो ने दार्शनिक राजा को रखकर [illegible] न्याय और निःस्वार्थ [illegible] का प्रतिरूप बनाया है। लेकिन प्लेटो का आदर्श राज्य एक आदर्श ही है। जिसे वास्तविकता का रूप नहीं दिया जा सकता।